हिन्दुस्तानी गद्य के दकनी नमूने

दूधनाथ सिंह

यहां हिन्दुस्तानी गद्य के कुछ दकनी (दक्षिणी) नमूने प्रस्तुत हैं। इनका विषय तसौव्वुफ़ और रचना समय लगभग 14वीं सदी से 18वीं सदी तक है। इतिहास में इस काल को हम 'सल्तनत' और 'मुग़लकाल' के नाम से जानते हैं। इसका अर्थ यह है कि इनके लेखक उस काल में पैदा हुए, जब भारत में मुसलमानों का शासन पूरी तरह दृढ़ हो चुका था। ऐसी स्थिति में इन लेखकों को अपने मत और विचारों को प्रचारित, प्रसारित करने की हर तरह से सुविधा थी। जैसे अंग्रेजों के शासनकाल में ईसाई मिशनरियों को हर तरह की छूट थी, ठीक वही स्थिति इस्लामी शासन में मुल्लाओं और सूफ़ियों की थी। यह स्थिति स्वयंसिद्ध थी। धर्म के आधार पर शासक वर्गों से सम्बद्ध होने के कारण इन सूफ़ी संतों या लेखकों को, जो मूलतः इस्लाम के ही प्रचारक थे, एक उदारवादी मुखौटा लगाने में हर तरह की आसानी थी। इस उदारवादी मुखौटे की इजाजत तभी तक थी, जब तक वह इस्लाम के विरुद्ध न जाता हो। फिर भी कट्टर इस्लामी विचारदर्शन के समानांतर एक मुक्त, उदारवादी विकल्प की खोज जब अरब और ईरान में शुरू हुई तो तसौव्वुफ़ का यह विचार सामने आया। इब्न अरबी का अद्वैत चिन्तन कट्टर इस्लामी चिन्तन से बहुत अलग नहीं है, फिर भी उसका चेहरा थोड़ा नर्म, थोड़ा अधिक मानवीय है। वह बलप्रयोग और धमकी या किसी तरह के लालच दिये जाने की इजाजत नहीं देता और इस तरह परोक्षतः इस्लाम के प्रति जनता में एक आकर्षण* पैदा करता है। भारत में इस्लामी शासन के स्थिर हो जाने के बाद अरब और ईरान से सूफ़ियों कलंदरों का आगमन तेजी से बढ़ा और यहां उनके अनेक सम्प्रदायों (चिश्तिया, फ़िरदौसी, सुहरावर्दी, कुबरवी, शत्तारिया, नक्शबंदिया) की स्थापना और प्रचार प्रसार शुरू हुआ। आगे चल कर दकन की मुस्लिम रियासतों में इन सूफ़ियों को

*मेरे परदादा का नाम राम सिंह चौहान था। जम्मू कश्मीर में मीर मुंशी के पद पर रहते हुए वह एक मुसलमान फ़कीर के मुरीद हो गये। यह घटना 1830 के आसपास की थी। बताते हैं कि वह फ़कीर मध्य एशिया से आये थे।... उनकी शोहरत सुन कर मेरे परदादा जी पहली मुलाकात में ही उनके मुरीद बन बैठे। कुछ दिनों तक उनका सत्संग चलता रहा, फिर एक दिन उन्होंने मेरे दादा जी (अपने बेटे) का नाम बदल कर अहमद बख़्श रख दिया। 'कुछ यादें'—डॉ. ज़ेड. ए. अहमद।

अपने मत के प्रचार प्रसार के लिए अपेक्षाकृत अधिक आजादी और निश्चिन्तता मिली। अगर शेख सलीम चिश्ती, निज़ामुद्दीन औलिया और बख़्तियार काकी जैसे सूफ़ी उत्तर भारत में हुए तो ख़्वाजा बंदानवाज़ गेसूदराज दकन में रहे। दकन के इन्हीं लेखकों और सूफ़ी संतों ने फ़ारसी के अनेक ग्रंथों से तसौव्वुफ़ के विचारों का तर्जुमा प्रस्तुत किया। इन लेखकों, अनुवादकों का उद्देश्य तसौव्वुफ़ के विचारों को जनता के लिए जनता की आसान और रवां ज़बान में सामने लाना था। हिन्दुस्तानी गद्य के ये दकनी नमूने इन लेखकों के इन्हीं प्रयत्नों की देन हैं। पढ़ने पर आप देखेंगे कि इन नमूनों की विषयवस्तु अधिकांशतः वही है– सूफ़ी मत का आख्यान और उसका प्रचार प्रसार। इसके लिए इन लेखकों ने अनेक प्रकार की लोककथाओं और संवाद शिल्पों का प्रयोग किया है। अक्सर इनकी शैली गुरु प्रवचन की है, कर्मकांडी है। कुछ कुछ उसी तरह जैसे आज के अनेक महामंडलेश्वर, मूक और विचारों से बेसहारा, मुक्तिकामी, शुभकामी जनता को किसी ऊंचे आसन पर बैठे हुए, मगन मन प्रवचन देते हैं। कोई भी धर्म इसी दुखद दुर्भाग्य का प्रतिफल है। मार्क्स का कथन ऐसी ही स्थितियों में याद आता है: 'The first requiste for the happiness of the people is the abolition of religion'.

यहां जिन लेखकों, अनुवादकों की रचनाओं से दकनी गद्य के ये नमूने प्रस्तुत किय गये हैं वे सभी दक्षिण भारत के प्रसिद्ध लेखकों में से हैं। ख़्वाजा बंदानवाज़ गेसूदराज, शाह बुरहानुद्दीन जानम, अमीनुद्दीन आला, शा मीरांजी ख़ुदानुमा, मीरा याक़ूब, शाह अमीन, मुहम्मद हुसैनी, मुअज़्ज़म क़ादरी, असदुल्ला वज्ही और मौलाना ज़ियाउद्दीन बख़्शी– ये सभी लेखक अनुवादक दकन की मशहूर हस्तियों में से हैं। अधिसंख्य ने फ़ारसी में लिखे तसौव्वुफ़ के ग्रंथों का अनुवाद किया है। ये अनुवाद सोद्देश्य हैं, यानी कि तसौव्वुफ़ के विचारों को आम आदमी की सरल, मुहाविरेदार और आकर्षक भाषा में प्रस्तुत कर उन्हें आम आदमी तक पहुंचाने का दृष्टिकोण सामने रखा गया है। इसी प्रयत्न में हिन्दुस्तानी गद्य के ये दकनी नमूने सामने आये। हिन्दुस्तानी, जिसकी ख़ुशबू से ‘हमारा देश और हमारी भाषा महक उठे’ की इच्छा अली सरदार जाफ़री ने जतायी थी, वह तो मौलानाओं और पंडितों की भाषिक धर्मांधता और ज़िद की भेंट चढ़ गयी, लेकिन उस प्रारम्भिक हिन्दुस्तानी गद्य की परछाईं यहां बाकी है। इनको प्रस्तुत करते वक्त हमने समझा था कि पाठकों के सामने प्रारम्भिक गद्य भाषा के उदाहरण रख रहे हैं, जो कि ये हैं, लेकिन हमें लगा कि कोई भी भाषा उसमें व्यक्त विचारों से अलग नहीं है। यानी उसमें व्यक्त विचारों को तहे ताक रखते हुए उसके स्वतंत्र अस्तित्व की कल्पना हम नहीं कर सकते। यह बात आज भी बहसतलब है कि कोई भी भाषा क्या मात्र एक प्रतीक या ध्वनि संकेतों का सम्पुंजन है या आगे चल कर वह शब्द समूहों और वाक्यों का चलता फ़िरता बदलता व्याकरण मात्र है या भाषा एक विचार भी है, जो हमारा जीना हराम कर सकती है या उसे सरल, नर्म और सुशांत बना सकती है? उसका दर्शन (भाषिक दर्शन) उसमें व्यक्त विचारों से स्वतंत्र है या यही उसका कारण है? आडवाणी की भाषिक तत्समता या देवबंद के मौलानाओं का अरबी, फ़ारसी मिश्रित भाषिक ठाट– दोनों ही क्या भाषा की आंतरिक संरचना को साम्प्रदायिकता के मैदान में खड्गहस्त नहीं करते? जर्मन भाषा के साथ यह ख़तरनाक खेल एक ज़माने में हिटलर ने भी खेला था और अंग्रेज़ी भाषा से उपनिवेशवाद की दुर्गंध आज भी नहीं गयी। वस्तु और ध्वनि के इस कठिन अंतर्सम्बंध को कैसे सुलझाया जाये? क्या उस द्वैत और फांक को किसी तरह पाटना और किसी भाषिक अद्वैत का अस्तित्व सम्भव है? तो ये सब बातें हैं...

यहां प्रस्तुत गद्यखंडों में ‘तूतीनामा’ सैय्यद मुहम्मद क़ादरी द्वारा फ़ारसी से हिन्दुस्तानी में तर्जुमा है। ‘तूतीनामा’ *मौलाना ज़ियाउद्दीन बख़्शी ‘बदायुंनी’* (सन् 1325 के आसपास) की फ़ारसी में लिखी गयी (दरअसल संस्कृत से छायानुदित) एक किताब है। बदायुंनी ने संस्कृत की ‘शुक सप्तति’ रचना की 70 में से 52 कथाओं का फ़ारसी भाषा में पुनर्लेखन किया था। इस रचना का तसौव्वुफ़ के विचार से कोई सम्बंध नहीं है। हम जानते हैं कि ‘शुक’, कादम्बरी और ‘पद्मावत’ का एक प्रमुख बुद्धिजीवी है। वह कथाकार, कवि, सौन्दर्यपारखी, भविष्यदर्शी और परिस्थितियों का विवेचक है। वाणभट्ट ने उसे एक तरह से रखा है और जायसी ने दूसरी तरह से। ‘गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा’, जायसी कहते हैं। हमारी परम्परा में ‘शुक’ लोक और शासक– दोनों का ‘इंटेलेक्चुअल’ है। वह दूरदर्शी, स्वामिभक्त, स्वतंत्र और विश्वसनीय है। ‘तूतीनामा’ के प्रस्तुत खंड में उसकी झलक देखने लायक है। लेकिन हमने यहां उसकी प्रस्तुति कथा के लिए नहीं, एक सुघड़ और रवां दकनी गद्य के लिए की है, जिसकी लय

और विन्यास हमारे आधुनिक गद्य में अभी भी बचे हुए हैं।... 'मिराजुल आशिकीन' *ख़्वाजा बंदानवाज़ गेसूदराज* की रचना है। ये दिल्ली में पैदा हुए लेकिन दकन चले गये और हमेशा के लिए वहीं के हो रहे। ख़्वाजा साहब एक बहुत बड़े सूफ़ी संत थे और इनका दूर दूर तक प्रभाव था। इनका जन्म सन् 1320 ई. के आसपास दिल्ली में हुआ था लेकिन दकन जाने के बाद फिर दिल्ली नहीं लौटे। 'कल्मितुल हक़ाइक' *शाह बुरहानुद्दीन जानम* (सन् 1550 के आसपास) की रचना है। 'शरह शरह तम्हीदात ऐनुलकज़ात' *शाह मीरांजी* की रचना है। दरअसल यह रचना अब्दुला-बिन-मुहम्मद हम्दानी की फ़ारसी रचना 'ऐनुल कज़ात' का हिन्दुस्तानी में तर्जुमा है। 'शमाइलुल अत्तकिया' भी *मीरा याकूब* (1700 ई.) द्वारा शेख रुकनुद्दीन इमाद की फ़ारसी किताब का अनुवाद है। 'गुफ़्तार' *शाह अमीन* की रचना है और 'शरह शिकारनामा' *मुहम्मद हुसैनी मुअज़्ज़म क़ादरी* की। ये सभी लेखक, चाहे वे सूफ़ी संत रहे हों या सामान्य सूफ़ी प्रचारक, क़िस्सागो या अनुवादक– सवाज यह उठता है कि हिन्दुस्तानी गद्य के इन दकनी नमूनों को हिन्दी, उर्दू गद्य का पूर्वज माना जा सकता है या नहीं? दूसरा महत्वपूण् ा तथ्य जो उभर कर सामने आता है, वह यह है कि जिस मध्यकाल को हम मुख्यतः कविता का युग मानते हैं, उसी समय दकन में हिन्दुस्तानी गद्य की इस मनमोहक शैली का विकास हो रहा था। यह भी सवाल है कि क्या हम हिन्दी गद्य के उद्भव और विकास को फ़ोर्ट विलियम कॉलेज की राजनीति और राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द बनाम राजा लक्ष्मण सिंह की कलह से बाहर निकालना चाहते हैं या नहीं? या क्या 'हिन्दी नयी चाल में ढली' सन् 1873 ई. के भारतेन्दु के उस भाषण तक अपने गद्य के इतिहास को सीमित करके हम उसके पिछले इतिहास और उत्तराधिकार को अंधेरे और अज्ञान की ओट दे देंगे और संतुष्ट हो रहेंगे?

तूतीनामा

एक दौलत मंदा गो के कि अह़मद सुल्तान नाम रखता था। बहूत मालो-मताअ़ व बहूत लश्कर व लक घोड़े एक हज़ार पान स़द हाती व सौ ऊटां बोजा ऊठाने हारे उसके नज़दीक ह़ाज़िर थे लेकिन उस कूं औलियाद नहीं था। वह हमेशा ख़िदमत में ख़ुदा परस्तां के जाता था। वह सुब्ह़-शाम वास्ते़ औलियाद के दुआ़ मंगता था। अम्मा पिछे कितेक रोजे़ ख़ुदा ने बादशाह यहां एक लड़का ख़ूबसूरत व आफ़ताब चेहरा व माहजबीं उसके तई बख़्शा। तब ओ बादशाह इस ख़ुशी सूं शगुफ़्ता दिल होकर कीते हज़ार रुपया दरवेशा और फ़क़ीरां कूं खैरात किया और तीन महीने तक वज़ीरां व अमीरां व दानायां व फ़ाज़िलां व उस्तादां कूं इस शहर के ज़ियाफ़त किया व ख़िलअ़तन भारी क़ीमत के दिया। जब लड़का सात बरस की उ़म्र का हुआ़ उस्तादे-कामिल के नज़दीक पड़ने बिठाया और लड़का थोड़े रोज़ में अलिफ़ व आमदन तामा व इंशा हर किरन व गुलिस्तां व बोस्तां व जामेउल क़वानीन व इंशा अबुल फ़ज़्ल व यूसुफ़ी व रुक्क़आ़ते-जामी तह़सील किया बल्कि अ़र्बी फ़ारसी कुछ बाक़ी नहीं रखा व क़ायदा नशिस्त व बरख़ास्त मजलिसे-पादशाही व क़ानूने-गुफ़्तार-ओ-रफ़्तार बज़्मे-शाहंशाही सीकया और नज़र में बादशाह और ख़ासगाने-दरगा के पसंद आया। तब बादशाह उस फ़र्ज़ंद का नाम मैमून रखा और एक औ़रत माह बदन ख़ुर्शीद रुख़सार की शादी कर दिया। नाम उस औ़रत का ख़ुजस्ता था। दरमियाने ख़ुजस्ता व मैमून के दोस्ती ज़्यादा हुई जैसाकि हर रोज़ होर सुब्ह़ो शाम यक जागा रहते व यकजा सोते व यक जागा बैठते। मैमून यक रोज़ पालकी सवार होकर वास्ते़ तमाशाए-बाज़ार के गया और वहां देखा कि एक शख़्स़ बाज़ार मे तोते का पिंजरा हात मे लेकर खड़या है। मैमून तोता बेचने हारे के तईं पूछया। इस तोते की क़ीमत क्या है? तोता बेचने हारा जवाब दिया कि इसका मोल हज़ार हून है। मैमून सुन कर कहा कि यक मुट्ठी पर दीगर निवाला भर कौन ईत्र मोल देगा तोता बेचने हारा जवाब देने नयीं सकया उस वक़्त तोता जवाब दिया कि "ऐ दौलतमंद मुझे मोल नयी लिया तो बहूत क़बाह़त है। बाद अज़ां तोता जवाब दिया कि ऐ ख़ुश जमाल वाले दौलतमंद स़ाह़िबे-कमाल अगर चे मैं तेरी नज़र में मूठी पर दिस्ता हूं लेकिन अ़क़्लो-दानाई सूं ऊपर आसमान के ऊड़ता हूं और ख़ुश गुफ़्तार शीरी सुख़नान मेरे

सुन कर तअ़ाज्जुब पर तअ़ाज्जुब होते हैं और अदना हुनर मेरे में है कि काम अगू का होने हारा ख़ूब पछानता हूं मैं अब के सौदगरां-क़ाबुल शहर के आते हैं वास्ते मोल लेने सुंबुल के और तमाम सुंबुल इस शहर का मोल लेकर व यकजागा जमा कर-कर रख! ओ सूदगरां आते बाद अज़ आने केतईं बींच उस सौदागर सूं तुजे बहोत फ़ायदा होयेगा। मैमून सुख़न तोते का सुन कर नक़्द यक हज़ार होन मोल देकर उस तोते कूं लेकर अपने घर कूं गया और अपने शहर का तमाम सुंबुल मंगा कर उसका मोल पूछया दुकनदारों उस सुंबुल का मोल दस हज़ार होन बोले उस वक़्त नक़द दस हज़ार हून उसका मोल देकर उस सुंबुल कूं एक जागा हिफ़ाज़त सूं रखया योम रोज़ तोते बोले मुवाफ़िक़ सौदागर क़ाबुल शहर के पहुंचे और दुकानदां सूं मांगे दुकानदारां तमाम कहे कि सुंबुल हमारे नज़दीक नयी हैं तमाम सुंबुल हमारे शहर का मैमून मोल ले रखया है बाद अज़ां तमाम सौदागरां मिल कर घर मैमून के आये व तमाम सुंबुल पचार हज़ार हून कूं मोल लेकर अपने शहर कूं गये। पिछे मैमून सुख़न पर तोते के बहुत ख़ुश होकर यक शारू कई! मोल लेकर नज़दीक तोते के रखया वास्ते वहशत तन्हाई का उसके दिल सूं निकल जावे और तोता और शारू कि दोनो मिल कर ख़ुश रहें। जैसाकि बुज़र्गान फ़रमाते हैं

कुंद हम जिन्स का बाहम जिन्स परवाज़
कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़

यक रोज़ मैमून ख़ुजस्ता सूं कहा कि दिल चहेता है कि सफ़रे-दरिया और मुल्कां और बंदरां का कर-कर आता जिस वक़्त तेरे तईं काम एक दरपेश हुए सिवाए मस्लेहते-तूती और शारू के मत कर, इस तरह़ सुख़ना बोल कर मुसाफ़िरत गया। मैमून गये बाद ख़ुजस्ता बहूत ग़म करने लगी और जुदाई सूं शौहर के न सोती और खाना तई खाती। तोता के त़रह़ क़िस्से और कहानियां बेहतर बोल कर ख़ुजस्ता के दिल कूं ख़ुश करता पिछे छः महीने के यक रोज़ ख़ुजस्ता नहा कर चेहरा अपने तईं संवार कर महाड़ी पर सवार होकर दरीचे महाड़ी के तमाशे को चहांका करती थी यक बादशाह हज़ारा दुसरे शहर का वास्ते सैर के उस शहर कूं आया था ऊने ख़ुजस्ता का चेहरा देख कर दीवाना हुआ व ख़ुजस्ता भी उस कूं देख कर आ़शिक़ हुई और पादशाह ज़ादा यक औ़रत कुटनी कूं बूला कर उसके हात नज़दीक ख़ुजस्ता कि पैग़ाम भेजा कि यक रात मेरे नज़दीक आयेगी तो एवज़ में एक अंगूठी लाक हून की मोल कर तुजे देउंगा मैं। ओ कुटनी आकर पैग़ाम पोंचाई! अव्वल सुन कर नामंजूर किये बाद अज़ वरग़लाने सूं कुटनी राज़ी होकर जवाब उसका कहलाई कि आधी रात के वक़्त तुम्हारे हुज़ूर में आऊंगी मैं। जब रात हुई ख़ुजस्ता लिबासे-बेहतर पैन कर रू-बरू शारू के आयी और ऊपर कुर्सी के बैठ कर अपने दिल में अंदेशा की मैं औ़रत हूं। शारू बी औ़रत है। अल्बत्ता सुख़न मेरा सुनेगी और शाहज़ाद के नज़दीक जाने कूं हुक्म देगी इस अंदेशा सूं तमाम कैफ़ियत रूबरू शारू के ज़ाहिर की। शारू सुन कर नसीह़त की कि ऐसा काम न करना कि तुम्हारी क़ौम में जो कि सख़्त ऐब और शर्म है इस वास्ते कि इश्क़ ख़ुजस्ता पर ग़ालिब था मना करने सूं शारू के ग़ुस्सा बहूत आया पिंजरे में सूं शारू कई बाहर निकाल दोनों पावां शारू के हातों मज़बूत पकड़ कर उस या ऊपर ज़मीन के मारी कि जां शारू का निकलया और मर गयी।

मेराजुल-आ़शिक़ीन

पीर मना किये सो परहेज़ करना मुराक़बा की गोली मुशाहिदे के कांसे में मीकाईल के मदद के पानी सूं।

जली का काड़ा कर को पीलाना। सगुन का काड़ा दपना निर्गुन हुआ तो शिफ़ा पावेगा तबीब फ़रमाये त्यूं परहेज़ करे तो उन्ने भी तबीब होवेगा होर माटी में माटी। माटी में पानी। माटी में आग। माटी में बारा! माटी में ख़ाली इन पांच अ़नासि़रां का वाजिबुल-वजूद बूजा तो मअ़ारिफ़त तमाम हुआ दूसरा

तन मुमकिनुल-वजूद उसका निगहबान इस्राफ़ील नफ़्से-लव्वामा ह़वासे-ख़म्सा मुमकिन के टांक सूं ग़ैर न देखना सो। ग़फ़लत के कान सूं ग़ैर न सुनना सो। वसवास के नक सूं बदबूई न लेना सो। नजली के ज़बान सूं ग़ैर न बोलना सो। मग़रूरी की शहवत कूं ग़ैर जाका न दौड़ाना सो। ग़फ़लत होर ग़ज़ब इन पांच ख़्वास़ का मुराक़बा करना। पीर के मुमकिन का मुशाहिद क़ाइम करना। ज़िक्रे-क़लबी कर शरीयत के कांसे में पीलाना। निर्गुन हुआ तो मुमकिन का दर्द जावेगा, यूं पानी में माटी पानी में पानी! आग में पानी, पानी में बारा पानी में ख़ाली। पांच अ़नासि़रां का मुमकिनुल-वजूद बूजा तो तरीक़त तमाम हुआ! तिसरा तन मुमतना-उल-वजूद उसका क़ाबिज़ करन हारा इज़्राईल। नफ़्से-मुतमइन्ना। इसे पांच पारदे हैं मुमतना के टांक सूं ख़ुदा त़रफ़ न देखना सो। सर का दर्द दोनो कानों सूं ख़ुदा ख़ुदा का कलाम न सुना सो ख़ुदा की बूई न लेना सो। तप ज़बान सूं ह़क़ की बाता न बोलना सो अच्छे। शहवत कूं न संभालना सो कर पे। उन पांच ख़्वास़ के पूड़ी बांदना। पीर के मुमकिन का मुशाहिदा करना ज़िक्रे-रूह़ी के शहद में मीला कर सगुन के पानी सूं पीना। निर्गुन हुआ तो मुमतना का दर्द जायेगा। आग में माटी आग में बारा बारे में आग आग में ख़ाली यू पांच अ़नासि़रां का मुमतना-उल-वजूद बूजया तो पीर का रुह़ मा'लूम होवेगा यूं हुआ तो ह़क़ीक़त तमाम हुआ। चौथा तन आ़रिफ़-उल-वजूद उसे जिब्राईल देने हारा उसो नूरानी तन मुह़म्मद का बोलते हैं आ़रिफ़ के टांख सूं जिब्राईल कूं देखना कानों सूं जिब्राईल की बातां सुन्ना नाक सूं जिब्राईल की बूई लेना! ज़बान सूं जिब्राईल की बातां बोलना। शहवत कूं जिब्राईल लक उसे अंपड़ना ऊन पांच ख़्वास़ कूं यक जागा मीलाना! पीर की सि़फ़ता कूं अपने सि़फ़तां कूं मुताला करना सो। मुराक़बा पीर के आ़रिफ़ तन का मुशाहिदा बांद कर ज़िक्रे-सिर्री की सूजी सगुन के शकर निर्गुन के पानी में पका कर खाना। परहेज़ इसका पीर सीवाये होर न देखना यूं हुआ तो आ़रिफ़ तन का दर्द जायेगा! दिल में जीवन रस अच्छे या रस में जीवन सुन मिठाई यूं हुआ तो उसे मुह़म्मदी बोलते हैं बारे में बारा। बारे में माटी। माटी में पानी। पानी में बारा। बारे में ख़ाली यूं पांच अ़नासि़रां का आ़रिफ़ुल-वजूद बूजया तो मआ़रिफ़त तमाम हुआ। पांचवा तन वाहि़दुल-वजूद। इसका फ़रिता इब्लीस ओ ख़ुदा के दरवाज़े पर रहता है। ईणाने को उनने देता बेगाने को उन्ने नीं देता। इसकी आशनाई किये तो अल्लाह मिलना होता है। वाहि़दुल-वजूद के अंक सूं। इश्क़ के कान सूं मुह़ब्बत की नाक सू याद का दम उसकी ज़बान सूं। ज़िक्र-लिसानु ग़ैब इसे इल्हाम बोलते हैं। इसका शहवत सूं सब्र इस पांच ख़्वास़ का मुराक़बा बांदना। पीर के वाहि़दुल-वजूद का मुशाहिदा करना। तौह़ीद के दरिया में ठहरना। ज़िक्रे-ख़फ़ी के मह़ल में वह़दहू ला शरीका लहू की नींद लेना। इस जागा का ह़ाल पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम कहे सो मा'लूम करना।

ऐ पहचांत किसी पैग़म्बर कूं नीं हुआ यो चार चीज़ां छुपा को रखया था। अपने ख़ज़ाने में मुह़म्मद रसूल-उल्लाह बख़शिया। मूसा पैग़म्बर रब्बे अरेनी बोले ख़ुदा से आवाज़ लन तरानी। अपीसे जिब्राईन होकर बूलाये आये मुह़म्मद कूं। तमाम मेराज क्यां निशानियां दिखलाये। मुह़म्मद हमें ज्यूं दिखलाये त्यूं तुम्हे देखो जिसे अपनी हिदायत करता है उसे फ़राक़ पैदा होता है मिलने के तईं। एक बादशाह की ताज़ीम एक अमीर कूं बड़ी करता है तो अव्वल जाबजा आराइश करता है। सो मुह़म्मद कूं पांच तन संवार कर सात ईमान के ऊपर लाये अंगे होके उरूज ते लेकर चाले नासूत की मंज़िल सूं क़िबले के शहर कूं अंपड़ सब वहां का जो कूचा आराइश बनाये सोज़र्रा ब ज़र्रा देखया। वहां से दुसरा मलकूत की मंज़िल सूं सैर कर कर मुमकिन-मुमकिन के शहर में जाकर पूछे वहां का ह़क़ीक़त आसमान के फ़रितयां का तमाशा देख कर जबरूत की मंज़िल सूं मुमतना के शहर को पहूंचे। वहां का सब ह़क़ीक़त अंधारा कहे नैं समझना आफ़ताब होर महताब का ऊजयाला नीं। मुह़म्मद जबरूत में मुतफ़क्किर हुए जिब्राईल अंग आकर वहां सूं इरफ़ां के मैदान में लेकर आये। जिब्राईल कूं पूंछे जवाब दिये। ऐ मुह़म्मद इस ज़ुल्मात अंधारे में तेरा नूर उजियाला है। चौथी मंज़िल लाहूत सो आ़रिफ़ुल-वजूद के शहर कूं पौंचे। लाहूत के स़द्र पर उन का तख़्त लाकू रखे। ह़दीसे-नब्वी... मुह़म्मद होर अल्लाह के

दरमियान पर पर्दा बांदे। उसे नक़ाबे-किबिरया बोलते हैं। इरफ़ाने कुर्सी पर मुह़म्मद कूं सुलाये अल्लाह मुह़म्मद बातां करते इश्क़ कूं बुलाये। इश्क़ मुश्ताक़ होकर आ़शिकां की बातां माशूक़ कूं माशूक़ की बातां आ़शिक़ को सुनाये। अल्लाह से यही अवाज़ आया। ऐ मुह़म्मद यक लक चौबीस हज़ार पैग़म्बरां मेरे तालिब नीं किया। मैं उनको तलब नीं किया। तेरा फ़राक़ मुझे बहुत हुआ मैं तुझे इस राह होकर लिया। उपे मेराज कियां निशानियां मैं तुझे देता हूं। इतां मेरियां बातां ख़ूब सुन कि तेरी उम्मत कूं मेरे बंदयां कूं ख़बर देता हूं।

इस का मानीं नबी ज्यूं बूजे बगैर न अंपड़े वतन कूं। ऐ अ़ज़ीज़ मुरीदे-स़ादिक़ अच्छे पीर के हुआ कौन अम्र-खुदा होर। रसूल पैदा किया है। अपने बूज कूं मुह़म्मद कूं यही हे नस़ीह़त करने कूं। इस बात में इमाम जाफ़र स़ादिक ख़ूब फ़रमाये हैं। पीर कूं दरकार हैं दस चीज़ समझना। सो उस पर फ़र्ज़ होता है। अव्वल इल्म अच्छे दानाई का बूज का दोएम सख़ावत अच्छे दिल का सोएम अ़मल अच्छे दानाई का चहारूम मुरीद के माल सूं तमान करना ह़िर्स़ का! पंजुम नादानी की बात न करे मुरीदां शशुम में अ़क़्ल अच्छे हफ़्तुम शुजाअ़त अच्छे हश्तुम याद में रहना। नहुम ह़ाल पर ह़ाल हुए दहम सो बोज का मालिक होवे।

कल्मितुल ह़क़ाइक

अल्लाह करे सो होवे कि क़ादिर तवाना तवी कि ओ क़दीम-उल-क़दीम उस क़दीम का भी करनहार सहज-सहज सो तेरा ठार। व सहज हुआ भी तूज थे बार। जिधान कुछ न था भी था नहीं दूजा शरीक कोई नहीं। ऐसा ह़ाल समजना खुदा थे खुदा कूं। जिस पर करम खुदा का होवे। सबब यो ज़बान गुजरी नाम ईं किताब कल्मितुल-ह़क़ाइक़ ख़ुलास़ा-ए-बयान-ओ तजल्ली अ़यां रौशन शूद इंशा अल्लाह तआ़ला कि ख़ुदा-तआ़ला क़दीम-उल-क़दीम क्यों था, ज़ात-ओ-सि़फ़ात-ओ कुल मख़लूक़ात इब्तिदा-ओ-इंतिहा बाक़ी-ओ-फ़ानी, क़दीम-ओ-जदीद बाहमा-ओ-बेहमा बदीं सबब सवाल-ओ-जवाब रौशन कर दिखलाया है। इंशा अल्लाह तआ़ला कि ख़ुदा-ए-तआ़ला आ़लिमुल-ग़ैब व़ाहादह ख़ुदा-ए-तआ़ला की नज़रे-इदराक करनहारी है। जुमला मख़लूक़ात पर कि वहां ने हमारी नज़र नहीं अंपड़नहारी है ज़ाते-क़दीमी पर अगर कोई उस क़दीमी बूझे को शरीक खड़ा रहया इस सबब फ़रमाया। ऐसा किसी का मजाल होवेगा कि पछान ज़ात का करेगा कि क़ालननबी स़ल्ललललाहू अ़लैहि वस़ल्लम लेकिन जैसे ख़ुदा लोड़े उसे राह देवे उपस में कि यहदी मंय्यशाउ उम्मीद दीखाया व मदद किया कि क़ालहू तआ़ला...। तो जेहद कशिश करे ख़ुदा में ख़ुदा थे कि क़ाला अ़ली कर्रम अल्लाह वज्हू...।

जान एक आ़रिफ़ ! ख़ुदा में व उसकी क़ुदरत में कुछ फ़र्क नहीं बल्कि ओ सो क़ुदरत क़ुदुरत सो ओ चुनांचे यके अस्त ज्यूं कि काफ़ूर होर ख़ुशबुवी दर गुल या शीरीन ज्यूं कि शकर या बुई दर दो दूनी न कहती खरी तक न कहे जायें दो। क्या ताबिश। जौहर की जौहर थे जुदा ऐसा... ख़ुलास़ा जुज़ मुर्शिद नहीं। ऐसा ज़ात दो पने बग़ैर यकसू मुह़म्मद नूर उसी का देख कर उन लोड़या कि अपसे अपी देखो कि इश्क़ का ग़ल्बा तो करने हुआ सार तो क़ुदरत सूं नज़र किया अगोचर की आरसी किया। सुन निरंकार की। उस हुआ थे वह हुआ आधी जहां नूर मुह़म्मद किया शाद है।

कि क़ुदरत में कुल मोजूदात अम्मा ह़कीमे ह़िकमत दीखाया समजा लोड़े कि ख़ाक थे संगो-शजर बार व लेकिन हमा ख़ाक अस्त। जान ऐ आ़रिफ़ यकस में यक चीज़ हैं सब फ़ना भी यकस में यक होनहारे हैं ज़मीन पिगले तो पानी में मिल जाये। पानी हैज़म आग में आग का हैज़म बाओ में बाओ का हैज़म हवा में हवा का हैज़म स़फ़ा में स़फ़ा का हैज़म क़ुदरत में क़ुदरत का हैज़म ज़ाते-क़दीमी में। जान ऐ आ़रिु जे चीज़ जहां थे वहांचे फ़िदा होनहारा है। दिसने में दो आपस थे फ़िदा होने में यक ज्यूं जल हवे कूं क्या जुदाई, वजूद दूसरा वलै पानी तो यक।

tadbhav.com home page

ऐ आ़रिफ़ ! तेरी नज़र में ग़फ़्लत आता सो तेरा तिसरा तन ग़फ़्लत का भी यो दोज़ख़ ज़ुल्मात है होर यो फ़हमदारी हैं चेता सो आ़रिफ़-उल-वजूद यो इरफ़ां तेरे रूह़ के मुरक्कब की उन कूं है ऐसे तीन तन ग़ैब के सो तेरे ख़ाकी इस तन में वह तूं गौहर नूर-ए-ख़ुदा तआ़ला तेरा दर तन हर चहार स़दफ़ अंदर नेहादा अस्त ता तू फ़हम कुन कि मन कदाम? ईताल या फ़हम कराये आ़रिफ़ इस कल्मितुल-ह़क़ाइक़ में आसान कर दीखलाया हूं। बरकत मुर्शिद कि वजूद चहार यके वाजिबुल-वजूद ये दिसता माटी का। मुमकिनुल-वजूद दिसता वक़्त मीशाक़ का व मुमतनुल-वजूद नहीं आता दिखलाने में आशकारा। तमाम यो मोअम्मा ज़ुज़...मुर्शिद गुमान दूर होता है। ईताल कि इ़ल्मुल-यक़ीन बे निहायत-व-ज़ुज़ ऐ़नुल-यक़ीन तह़क़ीक़ शूद ता ऐ तालिब इ़ल्म तसलीम ब्रा-ओ-फह्म नेक कुन। ईताल तेरा तुझे दीखलाना लगेगा लोड़े ख़ुदा-ए-तआ़ला तो तूं अरे फ़िक्र कर देख ये नेकात क़रार रख कि जीता रम्ज़ होता व इशारतो-फ़ेलो ह़रक़ातो-सकनात वजूद में जीते फ़ेल पर उसका मुह़ासिबा लेन हारा कोई है तो आ़रिफ़ उपस पस अ़क़्ल कबीरा अगर इसी ख़ातिर खूब क़रार कर सुन इस वजूदे-खाक़ी देखेन हारा हो कि मैं तो इसका जान हारा ग़ौहर तूं ख़ाक न होए इस जान पने कूं मर्ग नहीं। ऐसा तन में जान सो तूं सब चीज़ां पर दूख सूख मरना व जीवना फ़ानी या बाक़ी या होता-ओ-जाता। इस का जानहारा सो तूं। यह तन ख़ाकी न होये तूं।

स़ही व लेकिन पतझड़ी हुई झाड़ कूं तो बाओ न रही इस सबब तेरे नफ़्स के फ़ेल के पात तेरी रूह़ के सात लगे हैं। वबारा सो नफ़्स इस सबब झूले में पड़या तो पस वहां का भी देखन हारा हो। वहां के बिकार रूप का जैता चेष्टा होता जहान थे सोच दूसरा तन वह तूं उसका अलादा देखें हारा सो उस में नको गिन ऐसा बेकार रूप सो रूह़ का मुरक्कब व जैसा तन यह वैसाछ उसी का अ़क्स। वह तन क़दीम मीशाक़ के वक़्त का। अव्वल व तन बाज़ू यह तन उसी का अ़क्स यो ईताल को देखने में उसका अ़क्स व यो तन वक़्ती वसेरी व तीरी क़िनारे होता है। व रूहानी तनो-मलाइकां-व-हूंरा भी तन धरते हैं व बुत क़वीस भी तन धरते हैं जैसे चीड़ नापाक़ दीवानगी के यह जीता इस तन सूं शहवत, ह़िर्स़, हवा खम्स का मोरचा उसकी स़ोह़बत सब इसी आज़ार होता है ज्यूं लोहा स़ोह़बत मियां भोगना, सूंगना, चाखना, देखना। यह फ़ेल सब इस तन के ये क्या सब रहे बल्कि ज़्यादत दीखला आने की ऐसे क़ुदरत ख़ुदा, की फ़हम में आता व नज़र में नहीं दिसता वलेकिन दिल की नज़र-ए-बातिन उसमें आता तूं उसका फ़हम दार हो व दोज़ख़-ओ-बहिश्त का ह़िसाब सब उस सूं ताल्लुक़ धरता है कि तूं व तै सब फ़ेल पर क़ादिर हो।

शरह़-शरह़ तम्हीदात ऐ़नुल-क़ज़ात

अल्लाह बड़ा स़ाह़िब है उसको बहोत सराना होर बहोत नवाज़ना कि उसकी ख़ुदाई थे दोनो आ़लम पैदा करने में अ़क़्ल क्यां अंखियां ह़ैरां हैं ख़ुदा दाइम क़ाएम है उसकी बुज़ुर्गी का मेहर सब पर है होर ख़ुदा यकेला है पैदा करता होर मारता है सब कूं न अपने हातों करता है न दुसरे कूं फ़रमाता है। होकने में दोनों आ़लम होकर आये यक इशारत में दूजी बार का ह़ाजत नहीं कहने का। ख़ुदा तआ़ला ऐसा पाक है ओ किसे ऐसा नहीं। ख़ुदा को सूरत नहीं। ख़ुदा पैदा करन हार है। ...ख़ुदा कहया तुमीं मुंजे बूझो मैं तुमना पैदा किया होर काम फ़रमाया इस बदल ऐस स़िफ़त ख़ुदा का है। पैदा किया तबक़ात सात आसमान के होर-रोशन चांद अजत तारयां सूं। ख़ुदा बादशाह है। ख़ुदा का बंदगी करना, ताअ़त करना बहोत फ़िक्र सूं होर बहोत ज़ारी सूं। ख़ुदा बाज दुसरा का बंदगी करना नहीं। ख़ुदा का स़िफ़त एगान्गी का है। बहोत ख़ूबियां देता ख़ुशियां देता अपना सब अह़वाल का ख़बर देता। ख़ुदा बाज ई देनहारा दुसरा कोई नहीं। ख़ुदा दाइम रहन हारा है ख़ुदा का कहना दाएम ई है... ख़ुदा कहया सब शै को तब्दील है। ख़ुदा की ज़ात को नहीं। तब्दील क्या माना है यक ह़ाल क़रार नहीं। दिल जानता है खरी नहीं जानता

रूह़ देखता है खड़ी नहीं नूर जान है न अंजाल वलै जान पना अपने में दुसरा ह़ाल बदलता है। ख़ुदा कूं यूं नहीं दायम यक ह़ाल है। ख़ुदा कहया इस तन कूं फ़ना करूंगा होर ज्यू कूं ख़ूबसूरत फ़रिश्ते के ऐसे देकर रखूंगा। उपस कूं भाया तो ओ ख़ुदाए-तआ़ला सब ज्यू मां सूं दाइम कायम अच्छेगा ख़ुदाए तआ़ला इस थे भी बहुत ख़ूबियां देनहारा है। ऐसा देनहारा ख़ुदाबाज़ दुसरा कोई नहीं ख़ुदा कहया मेरा स़िफ़त अव्वल भी वैसा चे था है ईताल आखिर बी वैसाया चे है। ओ ख़ुदाए-तआ़ला ऐसा सकता है उसके ख़बर देन पर सब आ़लम कूं तह़क़ीक़ आया। सालेहां पर सच्चे लोगां पर बंदगी करन हारां पर दुरूस्त आया चे उस ख़ुदा का बड़ाई ऐसा है ख़ुदा कहया कि ऐ मुह़म्मद ख़ुदा ऐसा बड़ा स़ाह़िब है तुमना कूं अपने मेहर थे बड़ाई होरए-ख़ूबियां दिया है तो तुमींए राह़त पाते है। होर काफ़िरां बुतां की बंदगी करते हैं। उनो राह़त पाते सो भी दुनिया ख़ुदा थी है न कि बुतां थे होर ख़ुदा तआ़ला कहया शिर्क का फ़िरां न जान कर बुतां कूं लियाए हैं कर ख़ुदाए तआ़ला काफ़िरा कूं दोज़ख देऊंगा कहया उनो पर ग़ुस़्स़ा किया इस बदल क्या जान कर बुतां कूं शिर्क लियाए कर होर मुह़म्मद स़लअ़म पर दायम तोह़फा भेजा बहोत होर दरूद भेजा बहोत मुह़म्मद की पाकी जागा पर यानी नूर पर तह़क़ीक़ उस मुह़म्मद स़लअ़म पर दाइम त़रीफ़ा होर बख़्शिशां बहोत उनों पर उनो के यारां पर होर जे कोई कि पैग़म्बर के बोजा में सो लोगां पर होर अपना दीदार होर ख़ूबियां बहोत-बहोत दिया ख़ुदाए तआ़ला ऐनू सबों थी। ख़ुशनूद है होर राज़ी है कि ई मुसलमां हैं बहोत होर राज़ी हैं बहोत ख़ुदा सूं ऐ सब नेमतां होर ख़ूबियां मुह़म्मद के करम थे मेहर और ख़ूबियां मुह़म्मद के करम थे मेहर और ख़ूबियां।

ऐ दोस्त तुमें क़ुर्आन के ह़र्फ़ां काले दीखते हैं। उजले काग़ज़ां पर सो ज़ाहिर क़ुर्आन यानी ख़ुदा क्यां बातां इस काले सतरां में नूर तो न देखे उसे मखलूक़ कहते हैं होर जिस क़ुर्आन कूं ख़ुदा कहया काग़ज़ ख़ुदा कहया इस क़ुर्आन कूं काग़ज़ होर ह़र्फ़ा नहीं कहया सो कौन बातिन क़ुर्आन है सो समझता मुह़म्मद का नूर ऐजूं बस्त ख़ल्क़ मुह़म्मद मुस्तफ़ा स़लअ़म कूं यक-सूरत सूं यक तन सूं यक आदी को देखते वे यूं देखन हारियां कूं ख़ुदा कहो कहया मुह़म्मद कूं ख़ुदा कहया कह ऐ मुह़म्मद मैं भी तुमना चे ऐसा आदमी हूं वलै फ़रिश्ता आकर ख़बर बोलता है।

शमाइलुल अत्तक़िया

अपनी ह़यात के वक़्त में मुंजे इरशात किये थे जो किताब 'शमाइलु अत्तक़या' कूं हिन्दी ज़बान में लिया आवे तो हर किसी कूं समजया जावे। उस वक़्त मुंजे यमना नहीं ताकि उनों यक हज़ार सत्तर पर आठवें साल कूं रेह़लत किये बज़ां उनों के भांजे आ़रिफ़ ह़क़ रसीदे आरिफ़ां के नूर दीदे मुस़्तफा के कलेजे मुर्तज़ा के नैन शाह मीरा ईं सैय्यद-हुसैन सल्लमहुल्लाह तआ़ला के ख़िलाफ़त के ज़माने में लिखने का शुरू किया जे कुछ मुश्किल अंगे आता था सो पीर की मदद सूं आसां लिख्या जाता था। जब ख़ुदा की तौफीक़ सूं किताब तमाम हुआ ह़ज़रत शाह के हुज़ूर होर मोह़क़्क़िक़े कामिल मोहिद वास़िले-शरीयत होर तरीक़त के मुवाफिक़ ह़क़ीक़त और मआ़रुत में स़ादिक़ स़ाह़िबे-ह़ाल अस़र भरे क़ाल, दोस्ते रब्बे जलील, बाबा इब्राहिम ख़लील के अंगे लेकर गया। मुताला फरमा कर खुश किये होर दुआ दिये। यो किताब फैलन फारसी था रुक्न एमाद दबीर मआ़नवी, ह़ज़रत सुल्तानुल-आ़रिफ़ीन ख़्वाजा बुरहान उद्दीन ग़रीब के मुरीद थे उनों बहोत मुद्दत लग बुज़ुर्गान के बहोत किताबां होर रिसाला मुताला किये थे। इस किताबां थे हर यक बयां अ़लाहदा कर-कर यों किताब फारसी लिखे हैं। होर इसका नावं शमाइलु-अत्तक़िया में रखे हैं। यानि परहेज़गारां कियां खस़्लतां। होर इस तमाम किताबां खारिज जे कुचे वलियां का अक़वाल होर अह़वाल होर ख़स़लतां होर क़ाफ अपने पीर की ज़बां मुबारक थे सुने हैं होर तलक़ीन पाये हैं सो बी इस किताब में तमाम लियाएं हैं जो तालिब कूं इतनी किताबां मुताला करना न पड़े होर आसान मतलब कूं अनपड़े।

इबलीस का गुनाओ है जो ओ ख़ुदा का आ़शिक़ दुआ होर एक पने का दावा किया। मुह़म्मद

का गुना यो हैं जो ख़ुदा मुह़म्मद का आ़शिक हुआ होर मुह़म्मद कूं माशूक कह्या। मुह़म्मद के ह़क़ में फरमाया कि बख़्शया ख़ुदाए तआ़ला का तेरे गुनाह अव्वल होर आख़िर के ऐसा गुनाह आदम होर आदम के सिफ़त के लोगां कूं बांट दिये यानि खासुल-ख़ास़ बी कुछ इस गुनाह में दाखिल हैं। वलै सब ए गुनाह पैग़म्बर स़ल्ललाहू अ़लैहे व सल्लम कोंचा दिये अगर ज़र्रा इस गुनाह में थे दोनों आ़लम के लोकां पर रखें तो सब ए फ़ना हो जावें अबु बक्र सि़द्दीक इस जागा कहे कि अफसोस पैग़म्बर का गुनाह होर सह्व होता तो ख़ूब था इस गुनाह का बयान यक रम्ज़ सूं करते हैं ख़ूब सुन आयाज़ कह्या की मह़मूद की ख़िदमत में मेरा कोई गुनाह इसथे बड़ा नहीं जानता हूं कि किधे मुंजे अपने तख़्त पर बिसलाता था होर मुंजे कहता था मेरा आ़शिक़ तुझ थे मुराद पाया। मेरी हस्ती तेरी हस्ती सूं ज़ेबा दिसनी तेरा वजूद मेरी पादशाही का धनी हुआ। इस गुनाह का बयान उस थे खोल कर कहना मना है शुरू में आ़म लोगां कुफ्र होर गुमराही में ना पड़े मुह़क्क़िकां जो इस गुनाह थे ज़ौक़ पाते हैं एक इशारत सूं इस नज़्म में कह्या गया है।

कशफ़ुल मह़जूबः- जिस पत्थर पर साल में एक बार ख़ुदा की नज़र होती है उसका ज़ियारत करना फर्ज़ है तो दिल का तवाफ और ज़ियारत करना उसथे बेहतर है कि दिल पर हर रोज़ तीन सौ साट बार ख़ुदा के लुत्फ की नज़र है कौल ख्वाजा बा यज़ीद दिल के लोगां का ज़ियारत करना बेहतर है सत्तर बार काबे की ज़ियारत करने थे

रुह़ुल-अरवाह़ः- ज़ाहिर का काबा पत्थरां का है होर बातिन का काबा असरारां का। वहां ख़ल्क़ तवाफ करते हैं यहां ख़ालिक़ के करम होर मदद जू फेरा फेरते हैं। वहां मक़ाम है इब्राहिम ख़लील का। यहां मकान है रब्बे जलील का। वहां एक च़मा है ज़मज़म, यहां की प्याले में मुह़ब्बत के दम बदम वहां हज्रे आसवद है यहां नूरे अह़मद हैं।

तरजुमा क़शीरीः- मैहतर इब्राहिम अपने फरज़ंद इस्माईल कूं कहे कि मैं सोना देखया जो तुझे ज़िबह़ करता हूं। इस्माईल कहे अगर तुम्हीं ना सोते तो ऐसा न देखते।

रिसाला रुमुज-उल-वास़लीनः- अगर सोने में कुचा ख़ूबी अछ तो बहिश्त में सोना होता पस मा'लूम हुआ जो सोना बुरा है व उस ख़ातिर बहित में सोना नहीं ऐ अ़ज़ीज़ जिसने सुताह सो मुंवा क्या सबब कि मरता होर सोता दोनों भायां हैं तूं नक्को सो दिल तेरा जागता रहे, नींद का बला थे नबी अ़लैहिस्सलाम कहे कि रात लम्बी है पस कोती नक्को करो तुमीं उसे तुमारे सोने सूं होर देस उजाला है पस अंधारा नक्को करो तुमीं उसे तुमारे गुनाहा सूं।

सपने में होर वाक़्या ग़ौबी में फर्क यो है- मिर्सादः- सपना ओ है जो ह़वास सब पूरा बेकार होवें होर ख़्याल बरकार अच्छे। सब ह़वास मग़लूब होवे पर ख़्याल की नज़र में कुछ-कुछ दस आवे उसे सपना कहते हैं यो दो वज़ाका है बुरा, सपना नफ़सानी दुसरा रूयाये स्वालेह़ यानि खूब सपना बुरा सपना ओ हैं जो सोने में नफ़्स के वास्ते सूं शैतानी वसवसे होर नफसानी ख़तरयां कूं इदराक करे उसे कुछ ताबीर नहीं कि यो हुक्म शैतान थे हैं। दुसरा ख़्वाब सपना सो नुबूवत के छितालिस जुज़ां में कायक जुज़ है कि ओ सपना ख़ुदा थे हैं। मुफस्सि़रां लिखें हैं कि पैग़म्बर इस्लाम कूं तीन अगले बीस बरस लग पैग़म्बरी थे इस मुद्दत पहले इब्तिदा छः महीने लग वहि सपने में होता था पस उपस हि़साब सूं ख़्वाब सपना यक जुज़ है पैग़म्बरी के जुज़ां में का खूब सपना नेक आदमी का छितालिसवां जुज़ है नुबूवत के जुज़ में का बहोत पैग़म्बरां थे जो उनो कूं किद्हे वहि ख़्वाब में होता था होर किद्हे बेदारी में होता था चूंकि मैहतर इब्राहिम कूं ख्वाब में वहि हुआ था कि अपने फरज़ंद को ज़िबह़ करो। मैं देख्या सोने में जो तह़क़ीक तुजे ज़िबह़ करता हूं पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम फरमाते हैं कि नौम-उल-अम्बिया वहि यानि पैग़म्बरां का सोना वहि है होर खूब सपना बी तीन वज़ा का है। यक ऐसा है जो जे कुच सपने में देखे सो उसे तावील होर ताबील का ह़ाजत ना अच्छे जैसा देखया अच्छे तैसाचा ज़ाहिर होवे चूंकि मैहतर इब्राहिम फरज़ंद कूं ज़िबह़ करता हूं कर सपना देखे। दुसरा वज़ा यूं है जो थोड़े सपने कूं

ताबीर होर तावील का हाजत अच्छे होर थोड़े कूं ना अच्छे चूंकि मैहतर यूसुफ कहे देखया मैं एग्यारह तारे होर आफताब होर-व-माहताब कं देखया मैं जो मुंजे उनो सज्दा करते एग्यारह तारे होर आफताब व महताब का तावील सो ज़ाहिर हुआ सो एग्यारह भाई हैं होर मां बाप थे होर सज्दा जूं देखे त्यूं त्यूंचा ज़ाहिर हुआ सो मां बाप दोनों यूसुफ कूं सज्दा किये। तीसरा वज़ा यों है जो तमाम सपने कूं तावील का हाजत अच्छे। चूंकि मिस्र का बादशाह सपना देखया मिस्र का बादशाह ख़्वाब देखया कि सात मोटे बैल सात दुबले बैलां कूं खाते हैं होर सात हरे झोंके गेहूं के सात सुके झोक्या कूं खाते हैं होर बंदीवाना ख़्वाब देखे यक बंदीवान शराबख्वार ख्वाब में देख्या कि शराब की खातिर दाक निचोड़ता हूं। तीसरा बंदीवान मुतंजी ख्वाब देख्या कि मै ख़ाने का तबक़ सर पर लिया हूं जानवरां उस तबक़ में थे रोटियां खाते हैं यो सब सपने हैं जो पादशाह होर बंदीवान देखे सो इस तमाम सपनयां कूं तावील का होर ताबीर का हाजत है।

गुफ़्तार शाह अमीन

तन क्या है अल्लाह दीगर आदमी के तन में इस पांच जिन्सां के पांच घर पांच दरवाज़े। माटी का घर तले उस का दरवाज़ा, तालू पानी का घर यक्जा इस दरवाज़ा टांख। टांख का घर पेशानी। उसका दरवाज़ा कान। बारे का घर फेफसा उस का दरवाज़ा नाक। हवा का घर नड़ड़ा, हलक़ उसका दरवाज़ा या रूख़ दीगर आदमी के तन में इस पांच जिन्सां के पांच फल पांच रंग पांच लज़्ज़त है। माटी का फल चाकना पानी का फल लगना आग का फल देखना, बारे का फल सूंगना हवा का फल सुना। माटी का रंग पीला आग का रंग काला पानी का रंग लाल बारे का रंग हरा। माटी का लज़्ज़त खारा, पानी का लज़्ज़त मीठा, आग का लज़्ज़त करवा, बारे का लज़्ज़त खट्टा, हवा का लज़्ज़त फीका। दीगर आदमी के तन में पांच मोज़ियां। अव्वल मोज़ी चील टांक ओ मोज़ी बदी का काम दिखाता, दूसरा मोज़ी कान मे है उसका नाओं सांप ओ मोज़ी बदी का बात सुनाता, तीसरा मोज़ी नाक उसका नाओं भंवरा बुरी जाते सुंगाता। चौथा मोज़ी...नाओं कुत्ता ओ मोज़ी बुरी बात कराता पांचवा मोज़ी अंदामे-शैहवत उसका नाओं...मोज़ी बुरा फेल कराता। आदमी इस पांच मोज़ियां कूं क़ैद करना बंदा के करना। दीगर आदमी के तन में पांच चोर हैं अव्वल चोर तमा ओ चोर ज़िक्र में हरकत करता। दुसरा चोर काहिली ओ चोर नमाज़ में हरकत करता। तीसरा चोर ग़ुस्सा ओ चोर अक़्ल में हरकत करता। चौथा चोर बख़ीली ओ चोर सख़ावत में हरकत करता इस पांच चोरां कूं आदमी क़ैद करना। दीगर आदमी के तन में छः ग़फ़लत है। अव्वल ग़फ़लत तमा दुसरा ग़फ़लत ग़ुस्सा तिसरा ग़फ़लत शैहवत चौथा ग़फ़लत बीमारी पांचवा ग़फ़लत भूलना होर बिसरना छटा ग़फ़लत पीरी। अल्लाह पार करे इस ग़फ़लत सूं। दीगर आदमी के तन में सात मस्तियां हैं। अव्वल मस्ती ज़ात की। मैं ज़ात वंता कहता। दुसरी मस्ती ख़ूबसूरती की मैं ख़ूबसूरत कहता, तिसरी मस्ती हर एक इन्सान कूं बदसूरत ही कहता चौथी मस्ती आप हुनरमंद बहुत कहता, पांचवी मस्ती माल की, छटी मस्ती वस्ल की, सातवीं मस्ती बादशाही की, आठवीं मस्ती अल्लाह की याद की। सात मस्तियां फ़ना अल्लाह की मस्ती बक़ा है। इस सात मस्ती में आदमी न रहना। दीगर आदमी के तन में बक़ा, मस्तियां आट है अव्वल मस्ती अल्लाह को इस तन में पहचानना। ई मस्ती बक़ा है दूसरी मस्ती मुहम्मद का वसीला रखना ए मस्ती बक़ा है। तिसरी मस्ती अल्लाह का नूर है। इस तने में उस नूर कूं हर रोज़ देखना होर आशिक होना। ई मस्ती बक़ा है। पांचवी मस्ती लदुन्नी का पहचांत करना ई मस्ती बक़ा है। छटी मस्ती अल्लाह की याद की उस त्याद पर ग़नी होकर रहना ई मस्ती बक़ा है। सातवीं मस्ती आप कूं अल्लाह में रखना ई मस्ती बक़ा है। आठवीं मस्ती आपका होर अल्लाह का पहचान्त करना बक़ा है। हर कदाम का काम नयी पहचानना अल्लाह का। देता ऐसा समझ अल्लाह दुनिया बा नसीब बाद। यादे-इलाही है। दीगर इस वजूद में चार जौहर है। इस चार जौहर कूं चार चोर हैं। अव्वल जौहर ईमान उस का चोर झूट, दुसरा जौहर इबादत ऊस का

चोर काहिली। तिसरा जौहर अ़क्ल ऊस का चोर ग़ुस़्स़ा चौथा जौहर शर्म ऊस का चोर तमा इस चार जौहर कूं जतन करना। दीगर वजूद में चार तबक़ हैं। इस चार तबक़ में दो बदी का मैल भरता है। आदमी इस चहार मैल सूं पाक रहना। इस चहार...अव्वल तबक़ दिल, ह़िर्स़ हवा के मैल सूं पाक रहना दुसरा तबक़ शिकम ह़राम तअ़ाम के मैल सूं पाक रखना तिसरा तबक़ ज़बान झूट ग़ीबत के मैल सूं पाक रखना चौथा तबक़ ताअ़त ओ रेया के मैल सूं पाक रखना... इस चार मैल सूं पाक रखना। दीगर आदमी के तन में पांच दरिया है। अव्वल दरिया दिल ऊस का झरा ज़बान, दिल का पानी ज़बान में सूं निकलता है खट्टा तीसरा दरिया यकजा उस का झरा टांक कलेजे का पानी टांख सूं निकलता है खारा। चौथा दरिया पता ऊस का झरा कान पते का पानी कान में सूं निकलता है करवा। पांचवा दरिया ऊस का झरा तारिक़। ह़लक़ का पानी तारिक़ में सूं निकलता है। फीका आदमी ने इसी पांच दरिया है। दीगर आदमी के वजूद में सात तबक़ ज़मीन सात तबक़ आसमान अ़र्श कुर्सी लौह़ क़लम है सबना। आदमी के दंदां सो अ़र्श के कंगूरे हैं, कुर्सी सो पेशानी है दस्त चुप कूं लौह़ बोलते, दस्त-रास्त कूं क़लम बोलते, अव्वल ज़मी तलवा दुसरी ज़मी पिन्दरी तिसरी ज़मी रान, चौथी ज़मी कमर, पांचवी ज़मी पेट व शिकम, छटी ज़मी सीना। सातवीं ज़मी गर्दन। अव्वल आसमान मून दूसरा आसमान नाक तीसरा आसमान अंखियां चौथा असमान पेशानी, पांचवा आसमान भवां, छटा असमान तालू, सातवां आसमान सर की खोपरी। दीगर आदमी के वजूद में मांटी, आफ़ताब, चांद तारे, बादल, बिजली है सभना। तल्ले कूं मांटी बोलते, कल्ले कूं आफ़ताब... कूं चांद बोलते कर देखूं तारे बोलते... कूं बादल बोलते। भौं कूं बिजली बोलते। आदमी मां के पेट में चौदह जिंस सूं पैदा होता है सभना।

शरह़ शिकारनामा

इस शिकारनामा का शरह़ फ़क़ीर ह़कीर मुह़म्मद ह़ुसैनी मुअ़ज़्ज़म क़ादरी अपने हौस़ले मुवाफ़िक़ फ़रमाये हैं। इस वास्ते के यो आ़जिज़ उस घर चिश्त में तालिब हुआ है होर अमीनउद्दीन आ'ला कूं सज्दा किया है। ऊन के तस़द्दुक़ सूं यो फ़क़ीर इस राज़ को पोंचा है। नो बाप यानी ह़ज़रत मुह़म्मद ह़ुसैनी गेसू दराज़ क़दुसल्लाह सिर्रहुल अ़ज़ीज़ फ़रमाते हैं नो बाप अल्लाह तअ़ाला उनों कूं... अल्वी किया। हर सू सात तकब़ आसमान होर अ़र्श होकर शै मिल कर नौ तबक होते हैं। यह नौ तबक़ ज़मीन है होर अल्लाह तअ़ाला ने उम्महात यानी... यो आसमान हो ज़मीनियां मादां सो सात तबक़ ज़मीन है होर उनो चहार फ़र्ज़ंद सो हमारे चार वजूद। तह़क़ीक़ हैं। आसमान व ज़मीन दर्मियाने पैदा हुई हैं। उस बाद अज़ फ़र्ज़ंद क़रार दिये हैं तो ह़ज़रत क़द्दसा सिर्रहू क़ुतुबुल-अकताब शाह बुर्हान स़ाह़िब यों फ़रमाते हैं कि इस वजूद का मह़ल हुआ यानी पैदा भी हुआ यहांचा होर रहेंगा बी यहांचा। होर चारो भाई सो ला ज़िमुल-वजूद मुमकिनुल-वजूद मुमतनुल-वजूद आ़रिुल-वजूद होर तीन भाई नंगे थे यानी उनो को वजूद ऐसे न थे जो नज़र के क़ैद में आवे होर एक भाई कपड़े फाटे सो यो वजूद तो ठार भाता है होर ऊस आस्तीन में पीके थे यानी ख़ुदा की मुह़ब्बत होर इश्क़ ऊस वजूद में है... चहार कमाना सो चहार राह शरीयत, तरीक़त, ह़क़ीक़त, मअ़ार्फ़त चहार राह मर्तबा शहीद होना यानी शहादते-मुबदा, हादते-वुज्दा, शहादते-उम्दा ओ शहादते-शोहदा हुआ... होर उनके चलना क़स़्द करना सो ज्यूं कमानां कूं गोशा हुआ चिल्ला न थी यानी नाम रखया क्या है। कमानां करना बे ज़ाहिर कमानां जैसा है व चहार तीरां सो चहार ज़िक्रां, सो ज़िक्र-जली, ज़िक्र-क़ल्बी, ज़िक्र-रूह़ी, ज़िक्र-सिर्री होर ऊस तीर कूं पीकां होर सूं... चार हरन सो चार नफ़स हैं। सो नफ़से-मुतमइन्ना, नफ़से-मुल्ह़िमा बहोत कामां ऐसे तदबीरां सूं किये जां उनो कूं कुछ मुश्किल पड़्या इस ठार। दुनिया तमाशे की ठार है वलै जो कोई आ़क़िल है वो अपनी जागा बहोत होशयार है दरो-दीवार ते बिचकने की जागा है अपने ज्यू के यार ते बिचकने की जागा है।... जूं तूं एकस कूं अपने ज्यू की बात पतया कर कता कि यो मेरे ज्यू का यार है। त्यूं इस यार कूं बी एक ज्यू

tadbhav.com home page

का प्यार है। उस का बी उस यार पर ऐतबार है यो राज़ किसे न बोल सी अगर ख़ातिर क़रार है। इस भरोसे पर यो तेरी राज़ की बात जाकर उस अपने ज्यू के यार कने कता। उसे यार कर पतयाया है। ज्यूं नयी रहता जां ज्यू पतयाता। वां हर यक बात कने कूं दिल में कुछ मुलाहिज़ा नहीं आता योंछ यार कूं यार, यार कूं यार कते-कते भीतर की छुपी बात भार जाती। तदबीर का बंद टूटिया यक आधे, वक़्त नयी सौ कने की बला आती। यार कूं यार कते नफ़र सुनया चाकर सुनया, एक बात पर चार बातां ज़्यास्त बनया। ऐसयां बातां सुनते भले आदमियां के नक़्शां चुनते। हुजूम मिलता चूंधरते पीछें वो खिलवत में की मुख़्फ़ी बात कूंचे-कूंचे बाज़ारें बाज़ार फिरते। इस बात का यो है जड़, इस जड़ का उसे नयी ख़बर। यो हैरां होतां परेशान होता। कता वाए यो बात तो मैं खिलवत में फ़ुलाने सूं कहा था वो भी एक बहाने सूं कहा था। यो बात भार क्यों पड़ी। यो बात ग़ैर ठार क्यों पड़ी तूं अपनी बात कूं अपे नयी छुपा सकया जब तो दुसरा तेरी बात न छुपा कर के बोले तो क्या अ़जब। एकस का माया लेना वलै अपना माया किसे न देना। जितना सकना उतना अपना मक़सूद अपने दिल में रखना दिल का यार सो याके परवर्दिगार। जिने हर किसे पतयाया। ऊने दगा खाया अगर कोई किसे पतया कर अपने राज़ की बात बोले ते उसे यूं छुपाना ज्यूं अपनी शर्म तो उसे कते हैं नेम उसे कते है धरम। हज़ार ज्यू का यार अच्छे तो बी कोई अपनी शर्म दीखलाता है। अपना शर्म दिखलाना किसे ख़ुश आता है। ऐसा काम हर्गिज़ किसे भाता है। अमानत में ख़यानत करना भले आदमी का काम नयी।

प्रस्तुति : डॉ. जूही बेगम